E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 10-13
Received: 06-11-2021
Accepted: 09-12-2021

डॉ. कीर्ति शुक्ला
अतिथि सहा.प्राध्यापक (शिक्षा), लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कीर्ति शुक्ला
अतिथि सहा.प्राध्यापक (शिक्षा), लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. कीर्ति शुक्ला

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन करने के लिए रीवा विकासखण्ड के छः शहरी एवं छः ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालय का चयन दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शत–प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 91.67 प्रतिशत शिक्षक, 66.67 प्रतिशत विद्यार्थी व 72.92 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है। कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों के मध्यमान अधिक है। इसका कारण लॉकडाउन के समय ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों को पर्याप्त खेलने के लिए स्थान मिलना है, जबकि शहरी क्षेत्र में जनसंख्या का दबाव रहता है।

मुख्यशब्दः कोविड–19, वैश्विक महामारी, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, प्राथमिक स्तर, छात्र, प्रभाव

1. प्रस्तावना
दुनिया भर में फैले कोविड–19 महामारी ने पूरे जगत में लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को काफी प्रभावित किया है। इस बढ़ते वायरस के संक्रमण से बचने के लिए संयुक्त राष्ट्र की अंतर–एजेंसी गठन की स्थायी समिति मानसिक स्वास्थ्य और मनोसामाजिक समर्थन की टीम ने कहा है कि अगर इससे बचना चाहते है तो आपको इस दौरान मानसिक स्वास्थ्य सहायता के मुख्य सिद्धांतों को अपनाना होगा। ये मुख्य सिद्धांत इस कोरोना काल में मानव अधिकारों और समानता को बढ़ावा देते है, अगर लोग आज इन सिद्धांतों को अच्छे ढंग से अपनाते है तो यह सिद्धांत आज इस महामारी संकट से बचने के लिए लोगों की भागीदारी का हिस्सा बनते है और अच्छे भविष्य निर्माण करते है। कोविड–19 की वजह से आज लोगों में दूरियाँ बढ़ती जा रही है, जिस कारण विभिन्न प्रकार की संस्थान चाहे वह कॉलेज हो या फिर फ़ैक्टरी सब कुछ बंद है। इस कारण लोगों की आय का साधन भी खत्म हो चुका है, जो कि दुनिया भर के लोगों के लिए चिंता का विषय बना है इस कारण लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा है।
बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत नाजुक होते हैं। किसी प्रकार का तनाव, चिंता या कोई आघात उन्हें गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है, जिसके कारण उन्हें लम्बे समय तक इसका प्रभाव झेलना पड़ सकता है। इस महामारी ने बच्चों की सामान्य गतिविधियों को पूरी तरह से बदल दिया है। उनके स्कूल बंद है, उनकी शिक्षा ऑनलाइन हो गई है और उनके साथियों या मित्रों के साथ उनकी बातचीत बहुत सीमित हो गई है। इसके अलावा ऐसे भी अनेक बच्चे है, जिनके माता या पिता में एक की या दोनों की या उनके रिश्तेदारों या उनकी देखभाल करने वालों की मृत्यु हुई है। इन सभी कारकों से बच्चों की मानसिक स्थिति प्रभावित हो सकती है क्योंकि इससे बच्चे भावनात्मक माहौल से वंचित हो गए हैं, जो उनके सामान्य वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
वयस्क व्यक्तियों की अपेक्षा, बच्चे तनावपूर्ण स्थितियों में अलग तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। कुछ बच्चे हठी हो जाते हैं, कुछ अलग–थलग हो जाते हैं, कुछ आक्रामक स्वभाव के हो जाते हैं, तो कुछ उदास रहने लगते हैं। इसलिए बच्चों की मानसिक स्थिति को समझना बहुत कठिन है। हम इस सच्चाई को जानते हैं कि आस–पास का माहौल बच्चों की भावनाओं या उनकी मन की स्थिति को प्रभावित करता है। कई बार बच्चे इस स्थिति को मन में बैठा लेते हैं। घबराहट, बीमारी या उनके प्रियजनों की मृत्यु से उनके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है और कभी–कभी, वे अपने डर या चिंता को व्यक्त करने में भी सक्षम नहीं होते हैं।
कार्यस्थल और व्यक्तिगत जीवन में महीन रेखा धुंधली होने से कई माता–पिता को अपने बच्चों की शैक्षणिक जरूरतों की देखभाल करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी से निपटने में कठिनाई हो रही है। हर आयु वर्ग के बच्चों की अलग–अलग जरूरतें होती हैं।

उन्हें समय, ध्यान, जुड़ाव, संसाधनों और अच्छे माहौल की जरूरत होती है। घर का तनावपूर्ण वातावरण मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति के लिए घातक हो सकता है, लेकिन एक सुरक्षित माहौल उन्हें मौजूदा मानसिक स्वास्थ्य की चिंताओं से बचा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता –

वास्तव में, पहले पांच साल किसी बच्चे के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और हमें बच्चों को बहुआयामी प्रोत्साहन प्रदान करने की जरूरत होती है। अच्छे माहौल की कमी, प्रोत्साहन की कमी या सामाजिक सम्पर्क की कमी बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। हालांकि हम बच्चों को संक्रमण के जोखिम में नहीं डाल सकते हैं, इसलिए हमें उनके लिए एक मौज–मस्ती भरा माहौल बनाने की जरूरत है, जिसमें बच्चे विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रहें। ऑनलाइन शिक्षा को भी गतिविधि आधारित होना चाहिए। मेरा यह मानना है कि हमें ऐसे तरीकों को अपनाने की जरूरत है जो बच्चों के लिए आनंददायक और सुरक्षित हों जिससे हम बच्चों पर महामारी के प्रभाव को कम से कम कर सकते हैं। इस संदर्भ में कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

3. अध्ययन का उद्देश्य –

1. कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
2. कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. परिकल्पना –

एच 1. "कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है।"

एच 2. "कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों में अंतर पाया गया है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा विकासखण्ड के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से प्राथमिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–5 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित 06 शहरी क्षेत्र तथा 06 ग्रामीण क्षेत्र से कुल 12 विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अर्थात कुल 12 प्रधानाध्यापक, प्रत्येक विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 24 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय से 05–05 छात्र–छात्राएं कुल 120 विद्यार्थी, प्रत्येक विद्यालय से 4–4 अभिभावक कुल 48 अभिभावक का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि :

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ःद्धए ैण्क्ण्ए बेपुनंतम जमेजए ष्जष ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रधानाध्यापक, अभिभावक साक्षात्कार प्रपत्र, शिक्षक एवं छात्र प्रश्नावली प्रपत्र के माध्यम से कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में प्राथमिक स्तर की शिक्षा की वस्तुस्थिति ज्ञात की गयी है। तथा छात्रों के अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए परीक्षाफल तथा स्वनिर्मित प्रश्नों के द्वारा परीक्षण किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, जे. सी. (2010)[1], अंसारी, एम.एम. (1988)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], दृष्टि (2020)[8] ने शोध विधि एवं कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक स्तर के बच्चों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के अन्तर्गत किए गए शैक्षिक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है।"

तालिका क्रमांक – 1: कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है, का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	संख्या	कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित					
			हुई है		नहीं हुई है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1ण	प्रधानाध्यापक	12	12	100.00	.	.	.	.
2ण	शिक्षक	24	22	91.67	01	4ण17	01	4.17
3ण	विद्यार्थी	120	80	66.67	10	8ण33	30	25.00
4ण	अभिभावक	48	35	72.92	05	10ण42	08	16.67
	योग	204	149	73.04	16	7ण84	39	19.12

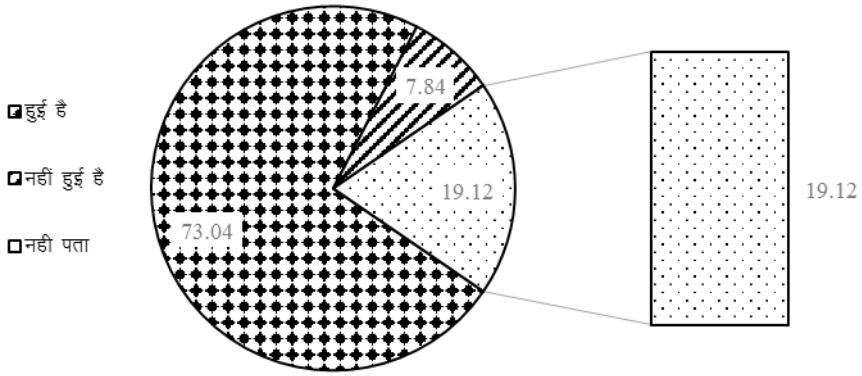

आरेख 1 : कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है, का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या :

तालिका एवं आरेख क्र. 1 से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के शत–प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 91.67 प्रतिशत शिक्षक, 66.67 प्रतिशत विद्यार्थी व 72.92 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है।

शोध क्षेत्र के 73.04 प्रतिशत यह मानते हैं, कि कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है। 7.84 प्रतिशत यह मानते हैं, कि कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित नहीं हुई है, जबकि 19.12 प्रतिशत को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित		
	हुई है	नहीं हुई है	नही पता
F_o	149	16	39
F_e	68.00	68.00	68.00
F_o-F_e	81.00	-52.00	-29.00
$(F_o-F_e)^2$	6561.00	2704.00	841.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	96.49	39.76	12.37

$$\chi^2 = \sum \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

χ^2 = 148.62

df = (r-1)(c-1)

df = (2-1)(3-1)

df = 1 x 2

df = 2

विश्लेषण एवं व्याख्या :
कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 148.62 है, जबकि तालिकामान 2क पर तथा 0.05 व 0.01 स्तर ;समअमसद्ध पर क्रमशः 5.99 व 9.21 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है। परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों में अंतर पाया गया है।"

तालिका क्र. 2 : कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों का तुलनात्मक अंतर का अध्ययन

समूह		ग्रामीण अंचल के छात्र	शहरी अंचल के छात्र
समूह की संख्या (छ)		60	60
मध्यमान (ड)		33.40	8.09
मानक विचलन ै(क)		27.00	9.17
क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्त्ण्द्ध		4.06	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

विश्लेषण एवं व्याख्या :
उपर्युक्त तालिका में कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों का मध्यमान क्रमशः 33.40 तथा 27.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.09 तथा 9.17 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ण् ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्त् का मान 4.06 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 58 से अधिक है। अतः शैक्षिक अधिगम के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।
अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों के मध्यमान अधिक है। इसका कारण लॉकडाउन के समय ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों को पर्याप्त खेलने के लिए स्थान मिलना है, जबकि शहरी क्षेत्र में जनसंख्या का दबाव रहता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों में अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

10. निष्कर्ष :

1. कोविड–19 महामारी के दौरान बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रभावित हुई है।
2. कोविड–19 महामारी के दौरान ग्रामीण और शहरी बच्चों में स्वास्थ्य और शारीरिक गतिविधियों में अन्तर पाया जाता है।

11. सन्दर्भ ग्रंथ :

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010). डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन्स.
2. अंसारी, एम.एम. (1988). डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई. यू. एवं इग्नू.
3. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
6. पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. दृष्टि, शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव, 5 अगस्त, 2020.
9. परवीन, डॉ. नाज – करोना महामारी और शिक्षा : शिक्षा को बचाने की चुनौती समाज के सामने अगला संकट है, अमर उजाला, 23 सितम्बर 2020.